Q4. विश्व में जनसंख्या वृद्धि तथा वितरण का वर्णन करें।
→ पृथ्वी पर मानव निवास लगभग 10 लाख वर्षों से है, परन्तु जितनी जनसंख्या पिछले 10 लाख वर्षों में ~~नहीं~~ बढ़ी ~~हो पाई~~, उससे कहीं अधिक पिछले 300 वर्षों में हो गई। यह बड़ा ही रोचक तथ्य है कि लगभग 10 लाख वर्षों में विश्व की जनसंख्या धीरे-धीरे 55 करोड़ हो पाई थी जबकि अगले 300 वर्षों में यह छः गुणा अधिक बढ़ गई। यद्यपि जनगणना का कार्य 18 वीं शताब्दी में शुरू हुआ था, फिर भी 17 वीं शताब्दी की जनसंख्या का अनुमान लगा लिया गया है। मध्य युग तक विश्व की जनसंख्या थोड़ी ही थी। विश्व में जनसंख्या वृद्धि निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है—

वर्ष	जनसंख्या (करोड़ में)
1650	55
1750	72
1800	93
1850	133
1900	166
1950	251

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट हो जाता है कि सन 1800-1850 तक जनसंख्या में 40 करोड़, 1850-1900 तक 33 करोड़, 1900-1950 तक 85 करोड़ की वृद्धि हुई तथा इसके अलावे 1950 के बाद 1990 तक विश्व की जनसंख्या में लगभग 250 करोड़ की

Scanned with CamScanner

वृद्धि हुई। इस प्रकार 1950-70 के बीच जनसंख्या वृद्धि की दर सर्वाधिक तीव्र रही। UNO की 1990 की एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व में प्रतिमिनट 1500 व्यक्ति बढ़ जाते हैं जबकि प्रतिदिन विश्व में 22 लाख व्यक्ति बढ़ जाते हैं। भारत में ही प्रति मिनट 72-74 बच्चे जन्म लेते हैं। इस अतिशय वृद्धि को देखते हुए UNO द्वारा अनुमान लगाया गया कि सन 2025 ईस्वी तक विश्व की जनसंख्या 1,000 करोड़ हो जाएगी। यह स्थिति अत्यंत भयावह होगी।

विश्व में जनसंख्या की वृद्धि सभी भागों में एक समान रूप से नहीं हुई है। 1950 ई० के बाद के आँकड़ों पर गौर करने से स्पष्ट हो जाता है कि जिन महाद्वीपों में अभी तक आर्थिक विकास नहीं हो पाया अर्थात जो आर्थिक दृष्टि से आज भी खेती-बाड़ी, पशुपालन खनिज उत्पादन जैसे प्राथमिक ~~क्षेत्र~~ क्रियाओं में लगे हैं उन क्षेत्रों में जनसंख्या अधिक तीव्रता से बढ़ी है। यह आश्चर्यजनक परन्तु सत्य तथ्य है कि विश्व के 85% बच्चे दक्षिण-पूर्वी एशिया और लैटिन अमेरीकी अफ्रीकी तथा मध्य एशिया के देशों में जन्म लेते हैं। जहाँ, शिक्षा व चिकित्सा जैसी सुविधाएँ तो रहने ही दें भोजन, वस्त्र व आवास जैसी मूलभूत सुविधाओं का भी नितांत अभाव है, जहाँ दरिद्रता अपनी चरम सीमा तक फैली है और जहाँ रहन-सहन का स्तर बहुत ही निम्न है।

<u>वितरण</u> (<u>DISTRIBUTION</u>) :- विश्व में जनसंख्या का वितरण बड़ा ही असमान है इस सम्बंध में क्रेजी महोदय ने कहा है कि, "विश्व के अधिकतर क्षेत्रों में कुछ लोग रहते हैं, जबकि कुछ ही क्षेत्रों में विश्व के अधिकतर लोग रहते हैं।"

प्रति एक K.m² में निवास करने वाले लोगों की संख्या को जनसंख्या घनत्व कहा जाता है। पूर्वी साइबेरीया का जनघनत्व प्रति वर्ग किमी एक व्यक्ति से भी कम है वहीं हांगकांग व सिंगापुर में 4000 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी निवास करते हैं। सर्वाधिक जनसंख्या ~~घनत्व~~ घनत्व मकाओ में 6000 व्यक्ति / K.m² पाया जाता है।

इसी सन्दर्भ में क्लार्क महोदय ने भी ठिक ही कहा है कि कुछ प्रदेशों में मानवीय जमघट तथा कुछ में विरलता मिलते हैं अर्थात कुछ प्रदेश अत्याधिक जनघनत्व वाले हैं तो कुछ प्रदेश जन शून्य हैं। Trewartha महोदय ने जन-संख्या वितरण के विश्व में तीन प्रारूप बताए थे —

(i) अत्याधिक जनघनत्व
(ii) सामान्य जनघनत्व
(iii) विरल जनघनत्व

विश्व में जनसंख्या वितरण को ध्यान पूर्वक देखने पर हमें मानव जमघट के पाँच प्रमुख क्षेत्र दृष्टीगोचर होते हैं, जो निम्नलिखित हैं—

(i) पूर्वी एशिया
(ii) द० पू० एशिया
(iii) दक्षिणी एशिया
(iv) पश्चिमी यूरोप
(v) आंग्ल अमेरीका के पूर्व-मध्य तटीय प्रदेश

इन पाँच क्षेत्रों के अलावे महानगरीय क्षेत्रों में जनसंख्या का आधिक्य मिलता है। जैसे - मैक्सिको सिटी, न्यूयार्क, ब्राजीलिया, लंदन, शंघाई, टोकियो, ओसाका, मुम्बई, कोलकाता आदि महा-नगरों में जनसंख्या का जमघट पाया जाता है। विश्व को जनसंख्या घनत्व के आधार पर तीन भागों में बाँटा जा सकता है जिनका वर्णन निम्नलिखित हैं—

(i) <u>अत्याधिक जनघनत्व वाले क्षेत्र</u> :- इसमें मुख्यतः मानसूनी

जलवायु वाले कृषि प्रधान क्षेत्र शामिल है जैसे - सम्पूर्ण पूर्वी व दक्षिणी एशिया, मेक्सिको आदि। जापान की स्थिति इस प्रदेश में अपवाद के रूप में है जहाँ जलवायु कृषि के अनुकूल नहीं है, परन्तु औद्योगिक विकास होने के कारण जनसंख्या घनी है। पश्चिमी यूरोप एवं उत्तर अमेरिका के पूर्वी तटीय क्षेत्र भी प्रदेश में आते हैं। इस प्रदेश में विश्व की 68% जनसंख्या निवास करती है। इस प्रदेश में औसत जनसंख्या घनत्व 2500 व्यक्ति / वर्ग किमी से अधिक होता है।

(ii) सामान्य जनघनत्व वाले क्षेत्र :- ये सामान्य भौगोलिक परिस्थितियों वाला प्रदेश है। यहाँ जलवायु न तो मानव बसाव के प्रतिकूल है और न ही पूर्णतः अनुकूल। इसके अन्तर्गत द० प० अफ्रिका, मध्य यूरोप, सवाना प्रदेश, मानसूनी जलवायु के पठारी प्रदेश, मध्य अमेरीका तथा पूर्वी आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड शामिल हैं। यहाँ विश्व की 22% आबादी निवास करती है जनसं० का औसत घनत्व 50 - 250 व्यक्ति / k.m2 होता है।

(iii) न्यून जनघनत्व वाले प्रदेश :- ये विषम जलवायु वाले प्रदेश है। यहाँ भौगोलिक परिस्थितियाँ मानव बसाव के प्रतिकूल हैं। प्रतिकूल वातावरण के कारण ही इन प्रदेशों का आर्थिक व सांस्कृतिक विकास नहीं हो पाया है। यहाँ का जनजीवन अत्यंत दुष्कर है तथा लोग आधुनिक समाज की सामन्य सुविधाओं से भी वंचित हैं। इसके अन्तर्गत आने वाले क्षेत्र है —

(a) टैगा व टुन्ड्रा के वन क्षेत्र

(b) सहारा जैसे गर्म मरुस्थलीय प्रदेश

(c) ग्रीनलैंड व साइबेरिया जैसे अत्यधिक ठंडे प्रदेश

(d) तिब्बत के पठार जैसे अत्यधिक ऊँचे क्षेत्र

Scanned with CamScanner